577715

कुल पृष्ठ संख्या–32 (कवर पेज सहित)

क्रम संख्या.........................

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

उच्च माध्यमिक परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

... के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी ✓ अंग्रेजी

विषय इतिहास

परीक्षा का दिन सोमवार

दिनांक 18-3-2024

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य है, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।
(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत करें।
(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदाहरणार्थ : 15¼ को 16, 17½ को 18, 19¾ को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांको की सारणी
(परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1	14	19	03
2	07	20	04
3	10	21	04
4	02	22	05
5	02	23	
6	02	24	
7	02	25	
8	02	26	
9	02	27	
10	02	28	
11	02	29	
12	02	30	
13	02	31	
14	02	योग	80
15	02	प्राप्त अंको का कुल योग (Round off)	
16	03	अंकों में	शब्दों में
17	03	80	अस्सी
18	03		

परीक्षक के हस्ताक्षर........ संकेतांक 3 1 1 9 8

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में बोर्ड द्वारा प्रदत्त 58 जी.एस.एम. ईको मैपलिथो कागज ही उपयोग में लिया गया है। 177/2024

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका, उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशंषा पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी :–
   (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये। परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या की जांच कर लें यदि पृष्ठ कम/अधिक या क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।
   (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रॉनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध हैं।
   (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ भी न लिखकर लावें। टेबल के आस–पास कोई अनुचित सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित हैं। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

द्वारा अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
		— खण्ड - अ —
	उ० (1) (i)	(ब) राजस्थान [✓]
	(ii)	(अ) दो [✓]
	(iii)	(अ) चीन [✓]
	(iv)	(स) सातवाहन [✓]
	(v)	(स) 23 [✓]
	(vi)	मिलान —
		(अ) फ्रांस्वा बर्नीयर → फ्रांस
		(ब) इब्नबतूता → मोरक्को
		(स) पीटर मुंडी → जर्मनी
		(द) मार्को पोलो → इटली
	(vii)	(स) ~~फ्रान्स~~ फ्रांस्वा बर्नीयर [✓]

BSER-177/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
	(viii)	(अ) दिल्ली [✓]
	(ix)	(ब) 1336 [✓]
	(x)	(अ) यूनानियों के लिए [✓]
	(xi)	(ब) 1793 [✓]
	(xii)	(द) जलियाँवाला बाग हत्याकांड [✓]
	(xiii)	(ब) 11 [✓]
	(xiv)	(स) बी० एन० राव [✓] 14
	उ० (2)	रिक्त स्थान उत्तर —
	(i)	चर्ट ।
	(ii)	दशपुर ।
	(iii)	बौद्ध
	(iv)	कर्नल कॉलिन मैकेन्जी ।

BSER-177 2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
	(v)	अमेरिका।
	(vi)	लार्ड वेलेजली।
7	(vii)	पं. ज्वाहर लाल नेहरू ने।
	30 (3)	अति लघूत्तरात्मक →
1	(i)	हाँ हम कह सकते है कि सिंधुवासियों का सुदूर देशों के साथ भी सम्बन्ध था जैसे → हमें दक्षिण भारत से सिंधु व सोने का आयात (मँगाया) जाता था जिसके साक्ष्य हमें सिंधु में मिले है। ओमान से चाँदी और ताँबें का आयात होता था, सिंधु मे हमे चाँदी और ताँबे के साक्ष्य मिले है जो बिल्कुल ओमान राज्य से मेल खाते है।
1	(ii)	पाटलीपुत्र को वर्तमान मे → पटना – कहते है।
1	(iii)	मातृवंशिकता → मातृवंशिकता का अर्थ है – जहाँ वंश परम्परा माता के नाम पर चलती है, वह मातृवंशिकता परम्परा कहलाती है। सातवाहन राजा वंश मातृवंशिकता परम्परा के थे।

BSER-177/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
	(iv)	इब्नबतूता के अनुसार 'दावा' डाक व्यवस्था को "पैदल (सैनिक) डाक" व्यवस्था कहते हैं थे।
1		
1	(v)	शेख निजामुद्दीन औलिया की दरगाह — दिल्ली।
1	(vi)	गोपुरम् → सुंदर मंदिरों के प्रवेश द्वार को गोपुरम कहते हैं।
1	(vii)	मुकद्दम या मंडल → पंचायत के प्रमुखिया।
1	(viii)	1929 का कांग्रेस का लाहौर अधिवेशन इसलिए महत्वपूर्ण था क्योंकि इसके अध्यक्ष जवाहरलाल नेहरू थे।
1	(ix)	गरीबों के साथ अपना तादात्म्य स्थापित करने के लिए गाँधी जी ने स्वयं की वेषभूषा बदल ली। साधारण एक सन्यासी की तरह एक धोती में आ गए। और गरीबों में उनकी जनभाषा में बात की व उनकी परेशानी को सुनकर निवारण किया। और उन्होंने गरीबों को गरीबी से निकालने के लिए प्रयास किया।
1	(x)	पं. जवाहरलाल नेहरू ने।
10		

BSER-177/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

— खण्ड - ब —

उ. 4 सिंधु घाटी सभ्यता का अंत कुछ इस प्रकार हुआ —
- प्राकृतिक आपदाओं के कारण।
- बड़े-बड़े बांध बनने के कारण सिंधु नदी का मुड़ जाना।
- बाढ़ के कारण।
- नदी का सूख जाना।

2

उ. 5 सिक्कों से हमें ऐतिहासिक जानकारी प्राप्त होती है —
- सिक्कों की सहायता से हमें उस काल के बारें मे आर्थिक व सामाजिक जानकारी प्राप्त होती है।
- वहाँ के राजा व सामाजिक स्थिति के बारें मे जानकारी प्राप्त होती है।

अतः इसलिए हम कह सकते है कि सिक्कों से हमें ऐतिहासिक जानकारियाँ प्राप्त होती है।

2

उ. 6 (स्त्रीधन) → "स्त्रीधन" से हमारा आशय है — विवाह के समय मिला धन जिन पर केवल स्त्रियाँ का ही अधिकार होता था। अतः उसे ही हम स्त्रीधन कहते है।

2

BSER-177/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

उ० 7 दो स्तूप निम्नलिखित है —

(i) साँची का स्तूप।
(ii) अमरावती का स्तूप।

2

उ० 8 इब्नबतूता ने वानस्पतिक उपज 'पान' का चित्रण कुछ इस प्रकार किया है —
इब्नबतूता ने कहा है कि 'पान' का पेड़ एक बहुत ही सुंदर वृक्षों में से एक था जो कि एक दिल के आकार लिए हुआ था इसकी एक डंडी थी जो इसके दो भाग करती थी। अतः इब्नबतूता ने 'पान' को भारत की सबसे अच्छी व सुंदर वानस्पतिक उपज बताया था।

2

उ० 9 चिश्ती सिलसिला की निम्नलिखित विशेषताओं ने उन्हे लोकप्रिय बनाया —
- चिश्ती सिलसिला एक ही ईश्वर की भक्ति पर बल देता था।
- चिश्ती सिलसिला पर लोग इसलिए विश्वास करते थे क्योंकि यह चमत्कार व जादू कर लोगों को आकर्षित कर लेते थे।
- चिश्ती सिलसिला ने सामाजिक भेदभाव का विरोध करते थे।

2

BSER-177.2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

उ० 10 विजयनगर साम्राज्य के दो राजकीय केंद्रों के नाम
(i) पाटलीपुत्र
(ii) तक्षशिक्षा

उ० 11

पोलज	परौती
• पोलज भूमि अर्थात पर खेती को रोका नहीं जाता है अर्थात् लगातार खेती की जाती है।	• परौती भूमि पर लगातार खेती नही की जाती है।
• पोलज भूमि पर दो से तीन फसले उगाई जा सकती है।	• परौती भूमि पर खेती को दो चार महीनो के लिए खेती नही की जाती है अर्थात इसकी उर्वरा शक्ति पाने के लिए इसे खाली छोड़ा जाता है।

उ० 12
- दक्कन दंगा रिपोर्ट — 12 मार्च 1875 को शुरु हुई थी।
- यह रि आयोग एक साहूकार के खिलाफ चलाया गया था क्योंकि उसने एक व्यक्ति की जमीन को नीलाम कर ब्रिटिश संसद मे पेश कर दी थी।
- दक्कन दंगा आयोग रिपोर्ट न्यायपालिका मे 1878 में पेश की गई थी।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

उ० 13

'उपनिवेशवाद और देहात' नामक अध्याय में कुदाल — पहाड़ी लोगों के जीवन का प्रतीक है जो कुदाल के द्वारा पहाड़ों मे झूम खेती करते थे। वहीं हल — संथालों का प्रतीक है। संथाल लोग हल चलाकर स्थायी खेती किया करते थे।

उ० 14

सहायक सन्धि 1798 ई. में लार्ड वेलेजली द्वारा लागू की गई थी। जिसकी निम्नलिखित शर्तें थी —

(i) नवाब को अपनी सेना वापस लेनी थी।

(ii) अंग्रेजी शासन की इजाजत के बिना की अनुमति के बिना कोई काम नहीं होगा अर्थात् किसी भी काम के लिए शासक से अनुमति लेनी पड़ेगी।

उ० 15

संविधान सभा ने अस्पृश्यता उन्मूलन हेतु दो निम्नलिखित सुझाव दिए थे। कोई दो —

(i) संविधान सभा ने अस्पृश्यता को अवैध घोषित किया और समाज में हो रहे अस्पृश्यता के भेदभाव को समाप्त करने का आदेश दिया।

(ii) किसी भी व्यक्ति को किसी के भी प्रति भेदभाव के का व्यवहार नहीं करने को कहा गया। और सबको समाज में समान व्यवहार करने को कहा।

BSER-177/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

— खण्ड - स —

उ. 16 मौर्य वंश की जानकारी प्राप्त हेतु निम्नलिखित स्रोत है —

- अशोक के शिलालेख → अशोक के शिलालेख अर्थात अशोक द्वारा लिखवाएँ गए पत्थर व कठोर सतह पर लिखे लेखे के माध्यम से हम मौर्य वंश के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकते है।
- मेगस्थनीज की इंडिका → मेगस्थनीज द्वारा लिखी गई पुस्तक इंडिका से भी हम मौर्य वंश की जानकारी प्राप्त कर सकते है।
- कौटिल्य की चालुक्य → कौटिल्य (चाणक्य) की पुस्तक चालुक्य से भी हम मौर्य वंश के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकते है।
- मूर्तिकला → मूर्तिकला से हम मौर्य वंश की मूर्ति में हुई कला व उनकी धार्मिक स्थिति के बारे में जान सकते है।
- सांस्कृतिक ग्रंथों के माध्यम से भी हम मौर्य वंश के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकते है।

3

उ. 17 **बौद्ध दर्शन की प्रमुख शिक्षाएँ —**

बौद्ध दर्शन की प्रमुख शिक्षाएँ निम्नलिखित है —

- यह बौद्ध दर्शन के अनुसार विश्व अनित्य है जो लगातार बदलता रहता है।

BSER-177 2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

यह आत्मविहीन है यहाँ कुछ भी स्थाई नहीं है।
- यहाँ सब कुछ अस्थाई है।
- घोर तपस्या व बाहरी आडम्बरों को विरोध कर
- मध्य मार्ग पर चलने की सलाह दी।
- ईश्वर संसार से मुक्ति प्राप्त के लिए अपनी इच्छाओं का त्याग करने पर बल दिया।
- और कहाँ की तुम स्वयं संसार से मुक्ति प्राप्त कर सकते हैं तुम्हें स्वयं को पहचानना हो तभी तुम्हें संसार से मोक्ष प्राप्त होगा।

उ. 18 मुगलकालीन मे पंचायतों के कार्य —

(1) मुगलकाल में पंचायत → मुगलकाल में पंचायत का सरदार एक मुखिया होता था, जिसे मुकद्दम या मंडल के नाम से जाना जाता था।

(2) मुखिया का चुनाव → पंचायत के मुखिया का चुनाव आमजनता द्वारा किया जाता था। मुखिया के हमेशा पुश्तैनी अधिकार प्राप्त होता था। पंचायत के मुखिया का चुनाव वहाँ के बुजुर्गों द्वारा किया जाता था। ये बुजुर्ग वहाँ के स्थानीय लोग / व्यक्ति होते थे। जो एक बड़े से पेड़ के नीचे बैठे होते थे।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(3) पचाँयत के मुखिया को स्वीकृति → जब मुखिया का चुनाव बुजुर्ग वर्गों द्वारा हो जाता था तो फिर उन्हे जमींदारों से स्वीकृति लेनी पड़ती थी। जब इन्हें जमींदारो से स्वीकृति मिल जाती थी तब पचायत में मुखिया अपने पद पर आश्रित होता था।

(4) मुखिया पर विश्वास → पचाँयत के मुखिया पर बुजुर्गों का विश्वास जब तक बना रहता था तब तक मुखिया पचाँयत के पद पर आश्रित रहता था। अगर गाँव के बुजुर्गों का विश्वास मुखिया खो देता था तो उसे पद से निष्कासित अर्थात् हटाया भी जा सकता था। इसलिए मुखिया को गाँव के बुजुर्गों के विश्वास का भी ध्यान रखना पड़ता था।

3

(5) मुखिया का कार्य → • भारत मे पचाँयत के मुखिया का कार्य गाँव की वितीय व्यवस्था की देख-रेख व रख-रखाव करना पड़ता था।

- मुखिया को ये भी देखना पड़ता था कि कोई धार्मिक संस्कृति अर्थात जातिवाद के अंदर है या नहीं।
- मुखिया की नजर में अगर कोई व्यक्ति किसी काम की अवहेलना कर रहा है तो मुखिया द्वारा उस व्यक्ति को दंड भी दिया जाता था और कभी-कभी तो मुखिया उस व्यक्ति को गाँव से निष्कासित अर्थात बाहर भी निकाल

BSER-177/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

दिया जाता था।

- मुखिया को यह भी देखना पड़ता था कि कोई जाति के बाहर विवाह तो नहीं कर रहा है।

उ० (19) 1857 का आंदोलन शुरू →

- 10 मई ~~187~~ 1857 को मेरठ से शुरू हुआ था। सर्वप्रथम मेरठ से शुरू हुआ था। 1857 की विद्रोह क्रान्ति आंदोलन।
- 10 मई 1857 के विद्रोह क्रान्ति का तात्कालिक क "एनफील्ड" राइफल पर सैनिका द्वारा विरोध किया गया क्योंकि इनके (राइफल) के कारतूसों पर गाय व सुअर की चर्बी लगी हुई थी और इसे भारतीय सैनिकों द्वारा मुँह खींचना उपयोग के लिए मुँह से खींचना होता था। जिससे हिंदू और मुसलमान दोनों सैनिक का धर्म भ्रष्ट होने का भय सैनिको को
- फिर यह आंदोलन 11 मई ~~1857~~ 1857 को दिल्ली में पहुँचा। उस वक्त दिल्ली के शास बहादुर शाह द्वितीय थे। लोगों ने दिल्ली का नेतृत्व प्राप्त करने के लिए बहादुर शाह को नेतृत्व प्राप्त किया।
- इसी प्रकार कानपुर का नेतृत्व - नाना साहिब ने सम्भाला।
- झाँसी के नेतृत्व की बांगडोर रानी लक्ष्मी बा ने सम्भाली।

(3)

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

और इसी प्रकार बिहार का नेतृत्व के आरा का नेतृत्व कुँवर सिंह ने व नागपुर के का नेतृत्व आदिवासी कोलु जाति के गोगु ने संभाला।

अतः इसी प्रकार 1857 का यह विद्रोह अर्थात आंदोलन पूरे भारत में फैल गया और यह वास्तव में एक बहुत बड़ा आंदोलन था।

— खण्ड - द —

उ० (20) मेरे अनुसार से अलवार और नयनार संतों ने निम्नलिखित विचारों से लोगों को प्रभावित किया था —

(1) नया आंदोलन → 12वीं शताब्दी में कर्नाटक में बासवन्ना नामक एक ब्राह्मण ने एक नवीन आंदोलन किया।

(1) अलवार → अलवार विष्णु संत भक्त थे। थे एक स्थान से दूसरे स्थान पर भ्रमण कर अपने तमिल भाषा में अपने भजनो व कथनों को गीत में गाते फिरते थे।

(2) नयनार → नयनार शिवभक्त संत थे। जो की घुमक्कड़ संत थे।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(3) अलवार और नयनार भक्त →

(i) अलवार भक्त में स्त्री भक्त अंडाल थी जो कि विष्णु भक्त संत थी। जो कि अपनी प्रेम भावनाओं को छंदो मे व्यक्त कर गीत गाती थी।

(ii) नयनार भक्त मे करईक्काल अम्मईय्यार एक स्त्री भक्त थी। जो शिव भक्त स्त्री संत थी। जिसने शिव प्राप्ति के लिए घोर तप व तपस्या भी की थी।

(4) अलवार और नयनार संतो के विचारो से प्रभावित लोग →

- अलवार और नयनार ने ब्राह्मणों के द्वारा बनाए गयी वर्ण व्यवस्था का विरोध किया।
- इन्होंने जातिवाद से सम्बन्धित सभी के भेदभाव को विरोध जताया।
- अलवार और नयनार दो परम्परा अलग-2 थी यह एक नही थी।
- इन्होंने लोगो के प्रति हो रहे भेदभाव का विरोध किया।
- इन्होंने हो रहे विधवा और पुर्नजन्म विवाह पर भी सहमति लागू की।
- इन्होंने जातिप्रथा का किसे भी विरोध किया।

5

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

उ. 21 "भारत छोड़ो आंदोलन सही मायने में एक जन आंदोलन"

- भारत छोड़ो आंदोलन सही मायने में एक जनआंदोलन था। भारत छोड़ो आन्दोलन 8 अगस्त 1942 में गाँधी द्वारा शुरू किया गया था।
- इस आंदोलन में गाँधी जी द्वारा ब्रिटिश शासन को समाप्त करने के लिए गाँधी जी ने सम्पूर्ण भारत में विरोध प्रदर्शन जताया और सम्पूर्ण भारत जनता को इसमें शामिल होने के लिए आह्वान किया।
- यह आंदोलन ने ज्यादा जोर तब लिया जब क्रिप्स मिशन 1942 मे भारत आया तो यह आंदोलन व्यापक हो उठा।
- इस आंदोलन में कॉलिजों में पढ़ रहे विद्यार्थियों ने इस आंदोलन मे भाग लिया। उन्होने पढ़ाई का रास्ता छोड़ जेल का रास्ता अपनाया।
- भारत छोड़ो आंदोलन में गाँधी जी ने आह्वान किया कि अपने सारे काम अर्थात छोड़कर इस आंदोलन मे शामिल हो।
- भारत छोड़ो आंदोलन से विद्यार्थी बड़ी मात्रा में आकर्षित हुए।
- लोगो ने अपने काम अर्थात सरकारी काम, रेल हड़ताड़ अर्थात रेल का बंद अर्थात अपने सभी कामों को छोड़कर उन्होंने हड़ताले की जिससे बड़ी मात्रा में भारत में हो रहे आर्थिक काम सभी के एक दम (अचानक) से चौपट हो गए। जिससे ब्रिटिश सरकार को झटका

5

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

लगा अर्थात् ब्रिटिश सरकार हिल गई।

- भारत छोड़ो आंदोलन में गांधी जी ने "करो या मरो" का नारा दिया।
- इस यह नारा भी भारत छोड़ो आन्दोलन में बहुत लोकप्रिय हुआ।
- जब जगह-जगह हड़तालें व प्रदर्शन होने लगे तो ब्रिटिश सरकार को लगा कि अब यहाँ से जाना ही अच्छा होगा।
- अतः हम कह सकते हैं कि यह आंदोलन अर्थात् "भारत छोड़ो आंदोलन" सही मायनें में एक जनआंदोलन था।

जय हिंद जय भारत

उ. (22) मानचित्र →

(अ) राखीगढ़ी
(ब) नासिक
(स) पाटलिपुत्र
(द) कलिंग
(य) मेरठ

Sl.No. : 282603

नामांक Roll No.

2	9	0	2	6	1	7

SS–13–Hist.

उच्च माध्यमिक परीक्षा, 2024

SENIOR SECONDARY EXAMINATION, 2024

इतिहास

HISTORY

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड

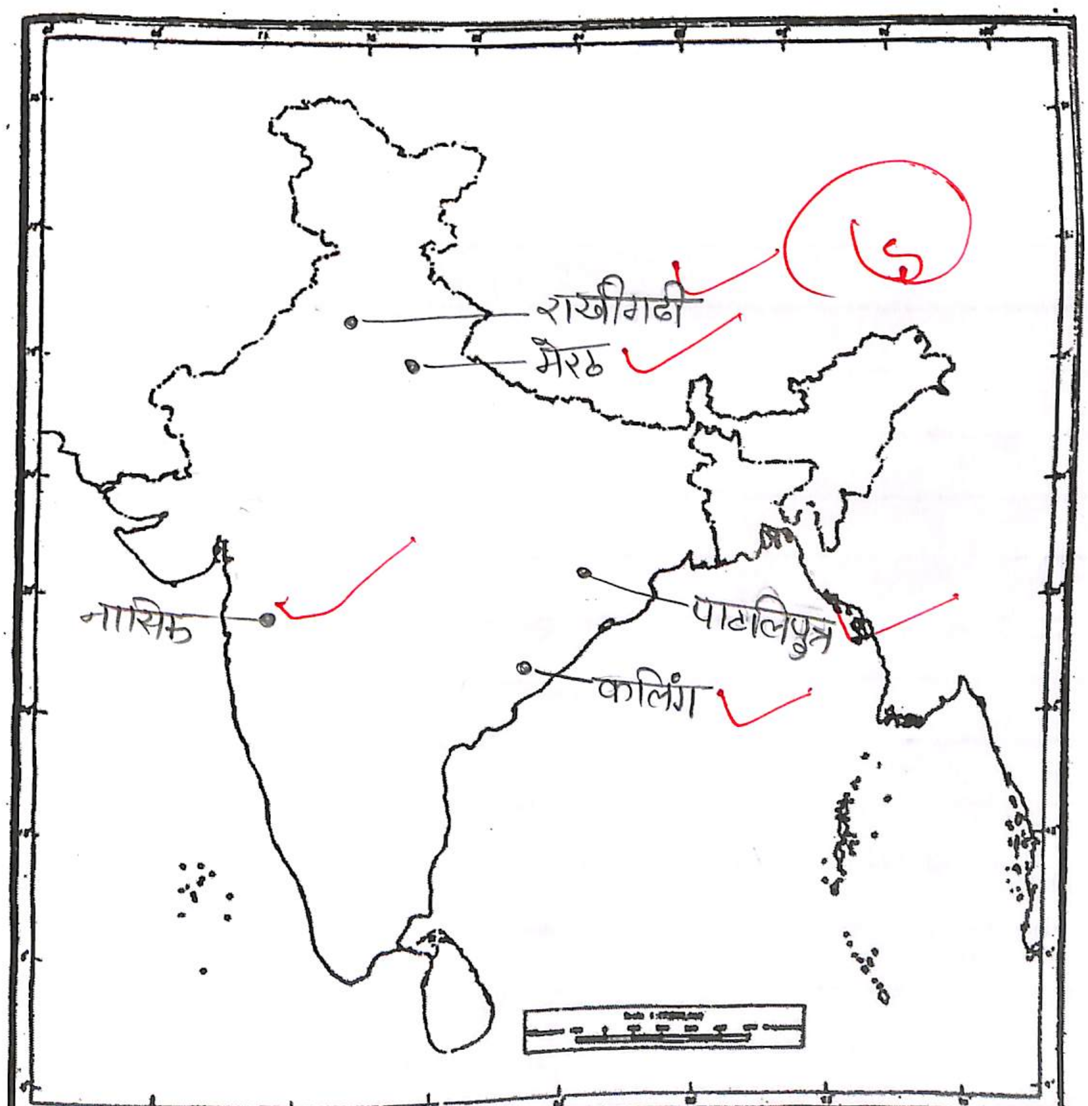

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
		"समाप्त"

BSER-177-2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-177/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-177/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-177-2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-177/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-177/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-177/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-177/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-177/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-177/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-177 2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-17/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-177/2024